आप्तवाणी

श्रेणी-२

[हिन्दी संस्करण]

जय सच्चिदानंद संघ

❑ **प्रकाशक :**

'जय सच्चिदानंद संघ' के लिये :
श्री जी. ए. शाह (सकल संघपति)
विभूति सोसायटी के पास में,
श्री गोकुलनाथजी चौक,
मीरा सिनेमा रोड़, अहमदाबाद-३८० ०२८
दूरभाष : (०७९) २५४३०९२२

❑ **© जय सच्चिदानंद संघ**

❑ **भावानुवाद निमित्त :**
बुद्धिप्रकाश डालमिया
३३/११७६ तिलकनगर (चेम्बूर)
मुंबई - ४०००८९
दूरभाष : ०२२-२५२२४९३४

❑ **प्रथम सकल संघपति**
खेतशी नरशी शाह की निगरानी में गुजराती में प्रकाशित आप्तवाणी-२ की चार आवृत्तियाँ :
● १९७४ ● १९८२ ● १९८५ ● १९९५

❑ **आवृत्ति :**
प्रथम संस्करण, वि. सं. २०६१,
३ मई, २००५, प्रत : २०००

❑ मूल्य :
''परम विनय'' और
''मैं कुछ भी जानता नहीं हूँ''
– यह भाव

❑ **भाषा संशुद्धि :**
श्री चंद्रमोहन झा (पत्रकार)
दूरभाष : २५८४२०७१

❑ मुद्रांकन विधायक :
टाईपोग्राफर्स,
सिल्वर ओक्स बिल्डिंग पालडी,
अहमदाबाद-३८० ००७
फोन : (०७९) ५५६१०४८१

❑ मुद्रक :
युनिक ओफसेट,
एन. आर. एस्टेट, तावडीपुरा,
अहमदाबाद-४
फोन : (०७९) २५६२३४४०

संसारविघ्न-निवारक

''दादा भगवान त्रिमंत्र''

१. नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवई मंगलम् ॥

२. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३. ॐ नमः शिवाय ॥

॥ जय सच्चिदानंद ॥

अक्रम विज्ञानी संपूज्य श्री दादा भगवान

॥ मंगलाचरण ॥

निज स्वभाव से सद्गुरु, अगुरु-लघु सर्वज्ञ हैं,
सूक्ष्मतमा-सिद्ध परम गुरु, सत्यम् निश्चय वंद्य है ।
तेंतीस कोटि देवगण, विश्वहितार्थ, स्वागतम्,
जग कल्याणक यज्ञ में, मंगलमय दो आशीषम् ।
सिद्ध-स्वरूपी मूर्त-मोक्ष, गलती-भूल को माफी दो,
व्यवहारार्थ सद्बुद्धि हो, 'निश्चय' में अभिवृद्धि हो ।

– जय सच्चिदानंद

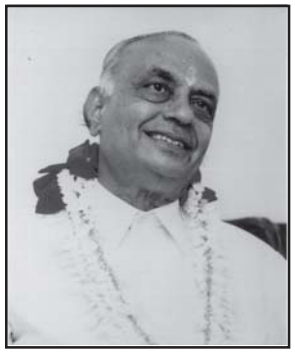

प्रवर्तमान ज्ञानी-पुरुष परम पूज्य कनुदादाजी

आप्त-विज्ञापन

हे सुज्ञजन !
तेरा ही स्वरूप
आज मैं तेरे हाथ में आता हूँ।
उसका परम विनय करना
कि जिससे तूँ तेरे द्वारा,
तेरे अपने 'खुद' के ही परम-विनय में रहकर
स्व-सुखवाली,
पराधीन नहीं ऐसी,
स्वतंत्र आप्तता अनुभव करेगा ।
यही सनातन आप्तता है
अलौकिक पुरुष की आप्तवाणी की ।
यही सनातन धर्म है अलौकिक आप्तता का ।

-जय सच्चिदानंद

प्रकाशकीय...

गुजराती में 'आप्तवाणी : श्रेणी-२' के पुनर्मुद्रण के अवसर पर...

सन् १९५८ की साल में ढलती शाम को 'सुरत स्टेशन' पर श्रीयुत अंबालाल मूलजीभाई को 'ज्ञान-प्रकाश' संपन्न हुआ । इस 'ज्ञान-प्रकाश' को सभी महात्मावर्य सूक्ष्म रूप से 'दादा भगवान' के नाम से वंदन करते हैं। इसी 'ज्ञान-प्रकाश' को संपूज्य 'दादाश्री' ने 'अक्रम विज्ञान', अध्यात्म शैली के स्वरूप में जगत को 'कुदरती भेंट' रूप में उपहार दिया है। 'दादाश्री' का आशीर्वाद एवं संकेत मिला कि यह 'विज्ञान' 'जैसा है वैसा ही' — यथावत् एवं तथावत् चौदह 'आप्तवाणी' की श्रेणी में निरूपित हो ।

आज दिन पर्यंत प्रकाशित और क्रमशः प्रकाश्य चौदह 'आप्तवाणी' के अंतर्गत 'अक्रम विज्ञान' के गुप्त-गंभीर रहस्य भरे हुए हैं। 'अक्रम विज्ञान'

द्वारा जगत के आध्यात्मिक - सामाजिक - सांस्कृतिक तत्त्वों पर प्रखर प्रभाव पड़ रहा है और यही है 'अक्रम विज्ञान' की बलिहारी ! 'व्यवहार' के साथ-साथ 'निश्चय' एवं 'उपयोग' को जीवंत-जागृत रखने में यह 'बाणी' परम उपकारक है ऐसा अनुभव प्रमाण हमें प्रत्यक्ष मिलते रहे हैं। मुमुक्षु एवं जिज्ञासु जनों की वर्धमान माँग से प्रोत्साहित हमें इस 'आप्तवाणी - श्रेणी-२' को पुनर्मुद्रित करने पर अपार हर्ष एवं परमानंद की अनुभूति हो रही है। इसी प्रकार अन्य सब श्रेणी के सुमनों की माला जगत-सन्मुख होती रहेगी।

'आप्तवाणी' के माध्यम से 'ज्ञानीपुरुष' के हृदय में संस्थित आशय-मर्म का प्रादुर्भाव करने का यह एक लघु प्रयास है, छोटी-सी एक कोशिश मात्र है। गुजरात के 'चरोत्तर क्षेत्र'में जन्म-संप्राप्त ''ज्ञानी-पुरुष-दादाश्री''ने, जिन्होंने लेखिनी हाथ में नहीं ली है, वे 'कैसेटों' या विडियो' में से संकलित होती जिस चेतन-वाणी की ओर संपूर्ण 'वीतराग' देखने-जानने में आये हैं। तथापि

उदयाधीन योग-संयोग में 'दादाश्री' के अवलोकन में से निरूपित इस 'आप्तवाणी' में अवगाहन करके, 'वीतराग विज्ञान' प्राप्ति के लिये, आत्म-प्रेममय सुसंवादी मंगलमय जीवन के लिए जनसमुदाय के युग-युगान्तर के पुरुषार्थ में, संपूज्य 'दादाश्री' के महानिमित्त से स्वतः सहज, कुदरती आयोजन स्वरूप आविष्कृत 'अक्रम विज्ञान' सीमाचिन्ह रुप बनेगा, यह शत-प्रतिशत निश्चित है।

'आप्तवाणी' के जरिये आप्तपुरुष संपूज्य 'दादाश्री' की चेतन-वाणी का आत्म-माधुर्य हरेक को मिले, आत्मा की अनंत शक्ति उजागर करने का दिग्दर्शन मिले — यही है दृढ़ भावना।

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी सम्यक् प्रकार से प्रकाशित करने में अमूल्य सहयोग देनेवाले सभी स्नेही को परम आदर से आभार अभिव्यक्त करता हूँ।

जय सच्चिदानंद

— खेतशी नरशी शाह

जीते-जी मुक्ति का वरदान

प्रिय जिज्ञासु एवं मुमुक्षु स्वजन !

संपूज्य श्री दादा भगवान की
सहज, निमित्ताधीन अवतरित चेतन-वाणी
परमात्म-प्रकाश का संस्पर्श करावें,
आपको निजानंद का आस्वाद दें,
व्यवहार एवं निश्चय के मर्म को उजागर करे,
आपके जीवन को मुक्ति-सुख की महक मिले,
आपकी जीवनयात्रा का प्रेरक, प्रेमल पाथेय बनें,
इस कल्याण भाव से प्रोत्साहित
हिन्दी भाषा में अनुदित आप्तवाणी-श्रेणी २
आपके करकमल में रखते हुए
परम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है ।
यह 'आप्तवाणी' में है 'अक्रम विज्ञान' का अर्क ।
व्यवहार-निश्चय के अनेक पहलुओं को प्रकाशित करती है,
गलत मान्यताओं का निरसन करके
आत्यंतिक मुक्ति की जीवन-शैली दर्शाती है,
अध्यात्म-यात्रा में स्व-धर्म का सर्वोत्कृष्ट प्रादुर्भाव करके
संसार के संघर्ष-संताप को मिटाती है
और जीते-जी ही मुक्त-जीवन का अनुभव कराती है ।
गुजराती आप्तवाणी श्रेणी की प्रस्तुति में
'स्वतः स्वांत सुखाय' सहायक सब का
सस्नेह संस्मरण कर भूरि भूरि धन्यवाद देता हूँ ।

प्रथम हिन्दी संस्करण में छूट गई किसी भी भूल-क्षति सुधारने के लिये
हम प्रतिबद्ध हैं, हम आपके सूचन का सहर्ष स्वीकार करेंगे ।

जय सच्चिदानंद ।

जी. ए. शाह
(सकल संघपति)

।। आप्तवाणी ।।

शुद्ध आत्मा को स्पर्श, द्रवित 'श्री-मुख' वाणी,
संसार सह 'मुक्ति-सुख' देती है 'आप्तवाणी' ।

व्यवहारी के पास, सर्वांग साफ कर देते हैं, 'परम-श्री',
हैं मोक्ष-मार्ग 'सिद्धक', निरपेक्ष दानी 'ज्ञानी' ।

अंतर मैल धो देते हैं, चित्त शुद्धिकारी स्वामी,
समकित दे दें तुर्तज, 'स्व-लक्षी' आत्म-वाणी ।

'दादा' का 'देह-मंदिर' है, जब तक सजीवन,
तब तक काम निकाल लो, 'फल मिलता सोलह आनी ।'

निरुपमेय संज्ञी, 'यह' वीतराग वाणी,
देखो, मौन 'वस्तु' बोले, 'सत्-लक्षी' प्रेम-कहाणी ।

ये हैं मोक्ष तक रक्षक, 'पूर्णावतार-कल्कि',
तीर्थंकरों के 'दादा' तिरसठ श्लाका 'शिल्पी' ।

— कविराज नवनीत संघवी

अक्रम ज्ञानामृत

''ज्ञानी पुरुष'' की वाणी सूक्ष्म संवेदक-स्वसंज्ञक है। हिन्दी-भाषी मुमुक्षुओं के लिए यह भावानुवाद प्रस्तुत है। 'आप' की वाणी मधुर है, मर्म-भेदक है, दर्शन-आलोकित है, ज्ञान-अभिसिक्त है, वचनबल से विराट, विशुद्ध स्व-भाव प्रदीपक है। बार-बार पठन-निदिध्यासन से निजानंद में निमग्न होने का अनमोल नजराना है।

यह पुस्तक नई शक्ति, नई चेतना, नई दिशा एवं नई आशा की किरण बिखेर कर लाखों लोगों के बहुमूल्य जीवन को सँवारने का कार्य करेगी। पुस्तक के अंतर्गत अभिव्यक्ति एवम् प्रस्तुतीकरण में अन्तर्भेदिनी स्पष्टता तथा सम्प्रेषण क्षमता का समन्वय है। इसके साथ-साथ उपयुक्त समायोजन एवं संयोग परीक्षण कि गूढ प्रतिवादन व भाषा-शैली के औदित्य का निर्वहन हुआ है। अतः इससे पाठकबंधु अवश्य लाभाँक्ति होंगे।

॥ जय सच्चिदानंद ॥

अनुक्रमणिका

- जगत-स्वरूप १
- जगत की अधिकरण क्रिया ७
- धर्म-स्वरूप १०
- निरपेक्ष धर्म और सापेक्ष धर्म १२
- संसार स्वरूप : वैराग्य-स्वरूप २१
- संसरण-मार्ग ३४
- संसार-वृक्ष ३८
- सत्देव : सद्गुरु : सत्धर्म ४०
- मूर्ति-धर्म : अमूर्त धर्म ४३
- अक्रम-मार्ग : ग्यारहवाँ आश्चर्य ५२
- प्रकृति ६८
- सहज प्राकृत-शक्ति देवियाँ ८६
  - माताजी ८७
  - सरस्वती ८७
  - लक्ष्मीजी ९०
- No Law-Law : बिना कायदा का फायदा १०४
- धर्म-ध्यान ११०
- कुदरती कायदा : 'भोगे उसकी भूल' १६१
- जगत : व्यवहार-स्वरूप १६९
- व्यावहारिक सुख-दुःख समझ १७७
- राग-द्वेष २०३
- बैर २१०
- संग-असर २१४
- त्रिमंत्र-विज्ञान २२६
- पागलों का अस्पताल - जगत २३२
- संयोग विज्ञान २५१
- तप २६१
- त्याग २७७
- भावहिंसा २८३
- ज्ञानयोग - अज्ञानयोग २९१
- ध्यान २९८
- मन ३०८
  - मन जगत-स्वरूप ३१६
  - विचार ३१७
- बुद्धि ३२४
  - भेदबुद्धि ३२५
- चित्त ३३१
- अहंकार ३४४
- अणुव्रत-महाव्रत ३५३
- आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान प्रतिक्रमण ३६२ ३६३
- योगेश्वर - श्रीकृष्ण ३७९
- वेदांत ४००
- द्वैताद्वैत ४०९
- वीतराग - विज्ञान ४१४
- वीतराग-धर्म ४२७
- भक्ति-भक्त-भगवान ४३१
- निष्पक्षपाती - मोक्षमार्ग ४४७
- महाव्रत - अणुव्रत ४६९
- मुँहपत्ती ४६९
- 'स्व' एवं 'पर' की रमणता ४८३
- इसका नाम है आप्तवाणी ! ४९१

आप्तवाणी

"Science of Absolutism" के "Absolute Scientist"

परम पूज्य 'दादा भगवान' के परम पवित्र
जगत कल्याणार्थ

समर्पण

वर्तमान शास्त्रोक्त असंयती पूजा के
महा आश्चर्यकाल के परम आश्चर्यकारी
ऐसे असंयत-संयत सर्वज्ञ 'ज्ञानी-पुरुष'
'दादा भगवान' की साक्षात् सरस्वती स्वरूप वाणी
आत्यंतिक मुक्ति चाहक मुमुक्षु, सच्ची शांति,
आंतर-शांति चाहक जिज्ञासु
और कलियुग के
अत्यंत आकुल-व्याकुल कर देनेवाले
भीषण ताप से त्रासित ऐसे जगत के
लिए करुणाभाव से परम कल्याणरूप बनी रहें –
इसी परम-ऋणीय भाव से,
अभेद भक्ति प्रेमभाव सह
समर्पित !

जय सच्चिदानंद

संतपुरुषों का योगबल,
सत्पुरुषों का योगबल
और प्रकट ''ज्ञानी पुरुष'' 'दादा भगवान' का योगबल
सारे ब्रह्माण्ड के जीवमात्र का
कल्याण करें, कल्याण करें, कल्याण करें
और उसमें निमित्त बनने की
हमें शक्ति दें, शक्ति दें, शक्ति दें ।

जय सच्चिदानंद संघ